

---

# Shri Kinkini Stotram

श्रीकिङ्किणीस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Kinkini Stotram

File name : kinkiNIstotram.itx

Category : devii, durgA, devI

Location : doc\_devii

Proofread by : NA

Description/comments : To chant after daily Puja by standing as suggested by Acharya Anand Pathak

Acknowledge-Permission: Courtesy Anand Pathak

Latest update : January 8, 2021

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 8, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Kinkini Stotram

---

### श्रीकिङ्किणीस्तोत्रम्

---



किं किं द्रुष्यं सकलजननि क्षीयते न स्मृतायाम् ।  
का का कीर्तिः कुलकमलिनी प्राप्यते नार्थितायाम् ॥ १ ॥

किं किं सौम्यं सुरवर नुते प्राप्यते न स्तुतायाम् ।  
कं कं योगन्वयि न तनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥ २ ॥

स्मृता भवभयध्वंसि पूजितासि शुभङ्गुरि ।  
स्तुता त्वं वाञ्छितां देवि ददासि करुणाकरे ॥ ३ ॥

परमानन्दबोधाद्भिर्रूपे तेजस्वरूपिणि -  
देववृन्दशिरोरत्न निघृष्टयराणाम्बुजे ।  
शिद्धिश्रान्ति मलासत्ता मात्रे मात्रे नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

सृष्टिस्थित्युपसंभार उेतु भूते सनातनि ।  
गुणत्रयात्मिकाऽसि त्वं जगतः कारणेच्छया ॥ ५ ॥

अनुग्रहाय भूतानां गृहीत दिव्यविग्रहे ।  
भक्तस्य मे नित्यपूजा युक्तस्य परमेश्वरि ॥ ६ ॥

औडिकामुष्मिडीसिद्धि देहि त्रिदशवन्दिते ।  
तापत्रयपरिभ्रान्त्वा भोजनं त्राहि मां शिवे ॥ ७ ॥

नान्यं वदामि न शृणोमि न चिन्तयामि ।  
नान्यं स्मरामि न भजामि न यात्रयामि ।  
भक्त्या त्वदीययराणाम्बुजमादरेण । (कर्णोक्तं पाण्डवगीतायाम्)  
मां त्राहि देवि कृपया मयि देहि सिद्धिम् ॥ ८ ॥

अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा वैकल्यात् साधनस्य च ।  
यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि ॥ ८ ॥  
द्रव्यहीनं किंयाहीनं श्रद्धामन्त्रविवर्जितम् ।

तत्सर्वं कृपया देवि क्षमस्व त्वं दयानिधे ॥ ९ ॥

यन्मया क्रियते कर्म तन्मलत् स्वल्पमेव वा ।

तत्सर्वं यं जगद्धात्रि क्षन्तव्यमयमञ्जलिः ॥ १० ॥

॥ इति श्रीकिङ्किणीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

---



*Shri Kinkini Stotram*

pdf was typeset on January 8, 2021



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

